

# डैनियल की पुस्तक - संख्या एक सौ सैंतालीस

अमेरिकी राजनीति को आकार देने में धार्मिक आंदोलनों की भूमिका: पैट रॉबर्टसन से लेकर क्रिश्चियन कोएलिशन तक

Jeff Pippenger

2024-03-20

हमने पिछला लेख निम्नलिखित अनुच्छेद के साथ समाप्त किया:

आध्यात्मवाद के माध्यम से प्रकट होने वाली चमत्कारकारी शक्ति उन लोगों के विरुद्ध अपना प्रभाव डालेगी जो मनुष्यों की बजाय परमेश्वर की आज्ञा मानना चुनते हैं। आत्माओं से प्राप्त संदेश यह घोषणा करेंगे कि रविवार को अस्वीकार करने वालों को उनकी त्रुटि का एहसास कराने के लिए परमेश्वर ने उन्हें भेजा है, यह कहते हुए कि देश के कानूनों का पालन परमेश्वर के नियम के समान किया जाना चाहिए। वे संसार में व्याप्त घोर दुष्टता पर विलाप करेंगे और धार्मिक शिक्षकों की गवाही का समर्थन करेंगे कि नैतिकता की गिरी हुई अवस्था का कारण रविवार का अपवित्रीकरण है। जो कोई उनकी गवाही को स्वीकार करने से इंकार करेगा, उसके विरुद्ध उत्पन्न होने वाला आक्रोश बहुत बड़ा होगा। महान विवाद, 589, 590.

धार्मिक शिक्षकों की यह "गवाही कि नैतिकता की गिरावट रविवार के अपवित्रीकरण के कारण है," संयुक्त राज्य अमेरिका में सूर्य-पूजा के प्रवर्तन की ओर ले जाने वाले इतिहास का एक मार्गचिह्न है। अमेरिकी टेलीविजन धर्मप्रचारक और Christian Broadcasting Network (CBN) तथा Christian Coalition के संस्थापक, पैट रॉबर्टसन ने 1988 में रिपब्लिकन प्राथमिक चुनावों में संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति पद के लिए चुनाव लड़ा। रॉबर्टसन के अभियान का ध्यान रूढ़िवादी ईसाई मतदाताओं को जुटाने और अपनी इंजीलवादी मान्यताओं के अनुरूप सामाजिक और नैतिक मुद्दों की वकालत करने पर केंद्रित था। 1989 में, अंत के समय में, अंतिम आठ राष्ट्रपतियों में से पहले के इतिहास में, Christian Coalition के नेता और संस्थापक ने राष्ट्रपति पद के लिए चुनाव लड़ा। रीगन का राष्ट्रपति-काल, अंतिम रिपब्लिकन राष्ट्रपति के इतिहास का नमूना है।

परमेश्वर के न्याय ऐसा वातावरण उत्पन्न करने वाले हैं जो The Great Controversy के उपर्युक्त खंड की पूर्ति करेगा, और जो Christian Coalition के कार्य के समानांतर है। Christian Coalition उन नैतिक और सामाजिक समस्याओं से निपटने के लिए अस्तित्व में आईं जिनके बारे में Sister White बताती हैं कि सरकार की बागडोर थामे हुए लोग उन्हें सुलझा नहीं सकते। Reagan के काल की Christian Coalition निकट भविष्य में होने वाले एक समान आंदोलन का प्रतिनिधित्व करती है। भविष्यसूचक दृष्टि से, 1880 और 1890 के दशकों में Blair Bills से जुड़े Sunday law संकट के दौरान Christian Coalition का पूर्वरूप National Reform Movement था। National Reform Movement का गठन 1888 में हुआ था, और Sister White ने अपनी रचनाओं में विशेष रूप से उस आंदोलन को संबोधित किया।

परमेश्वर की प्रजा की प्रतीक्षा एक बड़ा संकट कर रहा है। विश्व के लिए भी एक संकट आसन्न है। युगों-युगों का सबसे निर्णायक संघर्ष हमारे सामने ही है। जिन घटनाओं को हम चालीस से अधिक वर्षों से भविष्यद्वाणी के वचन के अधिकार पर आसन्न घोषित करते आए हैं, वे अब हमारी आँखों के सामने घटित हो रही हैं। विवेक की स्वतंत्रता को सीमित करने हेतु संविधान में संशोधन का प्रश्न पहले से ही देश के विधायकों के सामने जोर देकर रखा जा रहा है। रविवार-पालन को बाध्यकारी बनाने का प्रश्न राष्ट्रीय रुचि और महत्व का विषय बन गया है। हम भली-भांति जानते हैं कि इस आंदोलन का परिणाम क्या होगा। परंतु क्या हम इस स्थिति के लिए तैयार हैं? क्या हमने लोगों को उनके सामने उपस्थित खतरे की चेतावनी देने का वह दायित्व, जो परमेश्वर ने हमें सौंपा है, निष्ठापूर्वक निभाया है?

ऐसे बहुत से लोग हैं, यहाँ तक कि रविवार-पालन लागू कराने के इस आंदोलन में लगे हुए लोग भी, जो इस कार्य के परिणामों के प्रति अंधे हैं। वे यह नहीं देखते कि वे सीधे धार्मिक स्वतंत्रता पर प्रहार कर रहे हैं। कई ऐसे हैं जिन्होंने कभी बाइबल के विश्रामदिन के दावे और उस झूठी नींव को नहीं समझा है जिस पर रविवार-प्रथा टिकी हुई है। धार्मिक विधान के पक्ष में किया गया कोई भी आंदोलन वास्तव में पोपतंत्र को दी गई रियायत है, जिसने इतने युगों तक विवेक की स्वतंत्रता के विरुद्ध निरंतर युद्ध किया है। रविवार-पालन का, एक तथाकथित मसीही प्रथा के रूप में, अस्तित्व "अधर्म के भेद" का ऋणी है; और उसका लागू करवाना उन सिद्धांतों की व्यवहारिक स्वीकृति होगा जो रोमनवाद की आधारशिला हैं। जब हमारा राष्ट्र अपने शासन के सिद्धांतों का इतना परित्याग करेगा कि वह रविवार का कानून बना दे, तो प्रोटेस्टेंटवाद इस कृत्य में पोपवाद से हाथ मिला लेगा; यह और कुछ नहीं होगा, केवल उस अत्याचार को जीवन देना होगा जो लंबे समय से अवसर की बाट जोहते हुए फिर से सक्रिय निरंकुशता में छलांग लगाने के लिए आतुर रहा है।

राष्ट्रीय सुधार आंदोलन, धार्मिक कानून बनाने की शक्ति का उपयोग करते हुए, जब पूरी तरह विकसित हो जाएगा, तो वही असहिष्णुता और उत्पीड़न प्रकट करेगा जो पिछले युगों में प्रचलित रहे हैं। तब मानव परिषदों ने ईश्वर के विशेषाधिकार अपने ऊपर ले लिए, अपनी निरंकुश शक्ति के तहत अंतःकरण की स्वतंत्रता को कुचल दिया; और उनके आदेशों का विरोध करने वालों के लिए कारावास, निर्वासन और मृत्यु का सिलसिला चला। यदि पापाइयत या उसके सिद्धांतों को फिर से कानून के द्वारा सत्ता में लाया गया, तो उत्पीड़न की आग फिर से भड़क उठेगी उन लोगों के विरुद्ध जो जन-प्रचलित भ्रांतियों के आगे झुककर अपने अंतःकरण और सत्य का बलिदान नहीं करेंगे। यह अनिष्ट अब मूर्त रूप लेने ही वाला है।

जब परमेश्वर ने हमें ऐसा प्रकाश दिया है जो हमारे सामने के खतरों को दिखाता है, तो यदि हम उसे लोगों के सामने रखने के लिए अपनी सामर्थ्य के अनुसार हर संभव प्रयास करने की उपेक्षा करें, तो हम उसकी दृष्टि में कैसे निर्दोष ठहर सकते हैं? क्या हम इस अत्यंत महत्वपूर्ण मुद्दे का सामना करने के लिए उन्हें बिना चेतावनी के छोड़कर संतुष्ट रह सकते हैं?

हमारे सामने एक निरंतर संघर्ष की संभावना है—कैद, संपत्ति की हानि, और यहाँ तक कि स्वयं जीवन के भी जोखिम पर—परमेश्वर की व्यवस्था की रक्षा करने के लिए, जिसे मनुष्यों के कानून निष्प्रभावी कर देते हैं। ऐसी स्थिति में, शांति और सौहार्द के खातिर, सांसारिक नीति देश के कानूनों का बाहरी रूप से पालन करने के लिए प्रेरित करेगी। और कुछ ऐसे भी होंगे जो शास्त्र का हवाला देकर ऐसे मार्ग का आग्रह करेंगे: "हर एक व्यक्ति उच्च अधिकारियों के अधीन रहे... जो सत्ताएँ विद्यमान हैं, वे परमेश्वर द्वारा ठहराई गई हैं।"

"परन्तु बीते युगों में परमेश्वर के दासों का मार्ग कैसा रहा है? जब चेलों ने उसके पुनरुत्थान के बाद क्रूस पर चढ़ाए गए मसीह का प्रचार किया, तो अधिकारियों ने उन्हें आज्ञा दी कि वे आगे से यीशु के नाम में न तो बोलें और न ही शिक्षा दें। 'परन्तु पतरस और यूहन्ना ने उत्तर देकर उनसे कहा, परमेश्वर की दृष्टि में क्या यह ठीक है कि हम परमेश्वर से बढ़कर तुम्हारी सुनें, यह तुम ही न्याय करो। क्योंकि जो बातें हम ने देखीं और सुनी हैं, उन्हें हम कहे बिना रह नहीं सकते।' वे मसीह के द्वारा उद्धार के सुसमाचार का प्रचार करते रहे, और परमेश्वर की सामर्थ्य ने उस संदेश की गवाही दी।" टेस्टिमोनीज़, खंड 5, 711-713.

परमेश्वर के न्याय संयुक्त राज्य अमेरिका के भीतर सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक क्षेत्रों में ऐसा वातावरण उत्पन्न करने वाले हैं, जो धार्मिक नेताओं को सार्वजनिक नैतिकता के पुनरुत्थान का आह्वान शुरू करने का औचित्य प्रदान करेगा, जैसा कि 1880 और 1890 के दशकों में देखा गया था, और फिर 1989 में समय के अंत को चिह्नित करने वाले राष्ट्रपति के इतिहास में भी देखा गया था। "परमेश्वर के लोगों पर एक बड़ा संकट आने वाला है। दुनिया पर भी एक संकट आने वाला है।" सिस्टर वाइट दो प्रश्न पूछती हैं, "जब परमेश्वर ने हमें वह प्रकाश दिया है जो हमारे आगे के खतरों को दिखाता है, तो यदि हम इसे लोगों के सामने रखने के लिए अपनी सामर्थ्य के अनुसार हर संभव प्रयास करने की उपेक्षा करें, तो हम उसकी दृष्टि में निर्दोष कैसे ठहर सकते हैं? क्या हम उन्हें बिना चेतावनी दिए इस अत्यंत महत्वपूर्ण मुद्दे का सामना करने के लिए छोड़कर संतुष्ट रह सकते हैं?"

हमारे सामने जो खतरे हैं, उन्हें दिखाने वाला कौन-सा प्रकाश रहा है, और यदि कोई प्रकाश न रहा हो, तो जब उन्होंने वह चेतावनी संदेश कभी सुना ही न हो, तो एक प्रेममय परमेश्वर अपने लोगों को चेतावनी संदेश प्रस्तुत न करने के लिए कैसे उत्तरदायी ठहरा सकता है? प्रिय पाठक, इन लेखों द्वारा दर्शाए गए प्रकाश के लिए आपको उत्तरदायी ठहराया जाएगा।

इन लेखों में डेमोक्रेट ड्रेगन शक्ति, रिपब्लिकन झूठे भविष्यद्वक्ता की शक्ति, पापाई शक्ति, इस्लाम और लाओदीकियन एडवेंटिस्ट कलीसिया, तथा शारीरिक इस्राएल की विशेषताओं के विशिष्ट वर्णन को जो सत्ता में हैं वे हेतु स्पष्ट मानेंगे, परन्तु यही परमेश्वर के वचन का वह संदेश है, जो पंक्ति पर पंक्ति की पद्धति से स्थापित है, और वे पंक्तियाँ पुकार रही हैं कि परमेश्वर के न्याय शीघ्र ही बढ़ने वाले हैं और उनकी आवृत्ति में तेजी से वृद्धि होने वाली है।

भविष्यसूचक दृष्टि से, 1989 में समय के अंत से ठीक पहले के इतिहास में संगठित हुई क्रिश्चियन कोएलिशन का अनुप्रयोग केवल 1880 और 1890 के दशकों के समानांतर तक सीमित नहीं है; वह उससे बढ़कर अधिक महत्वपूर्ण है। हमने अभी बहन वाइट से जिस अंश का उद्धरण दिया, उसमें वे आत्मवाद को उन दो उपायों में से एक ठहराती हैं जिनसे शैतान संसार को बंदी बनाता है, और आगे चलकर वे उन चमत्कारों का भी उल्लेख करती हैं जो वह करेगा।

1988 के चुनाव के बाद, अर्थात् क्रिश्चियन कोएलिशन के आगमन के उपरांत, अजगर के क्षेत्र, पशु के क्षेत्र और झूठे भविष्यद्वक्ता के क्षेत्र में शैतानी चमत्कारों का अभूतपूर्व प्रकटीकरण हुआ। इन घटनाओं का ठीक प्रकार से मिलान करना महत्वपूर्ण है, क्योंकि वे संयुक्त राज्य अमेरिका में शीघ्र आने वाले रविवार कानून के बाद मसीह का रूप धरकर आने वाले शैतान के आगमन का पूर्वरूप प्रस्तुत करती हैं।

कैथोलिक धर्म के क्षेत्र में, 1990 के दशक में दुनिया ने देखा कि तथाकथित कुंवारी मरियम के दर्शन होने लगे; साथ ही संतों की मूर्तियों से रक्तस्राव जैसे चमत्कार, आकाश में दर्शन के चमत्कार, बिना बादलों वाले आसमान से फूलों की पंखुड़ियों की बारिश, और अन्य बेतुके शैतानी चमत्कार भी बताए गए। उन दिनों दुनिया भर में हजारों लोग तीर्थयात्राओं पर निकले; इन घटनाओं द्वारा पैदा किए गए भ्रमों में फँसकर जनसमूह इनकी ओर खिंचता चला गया। उनके बारे में किताबें लिखी गईं, पत्रकारों ने जाँच-पड़ताल की, और टाइम तथा न्यूज़वीक जैसी पत्रिकाओं ने इन्हें अपने मुखपृष्ठ पर प्रदर्शित किया।

अजगर के राज्य में, भारत की हिन्दू प्रतिमाओं ने ऐसे शैतानी चमत्कार प्रकट किए कि जब उनके मुख पर रखे गए चम्मचों या गिलासों में पेय-नैवेद्य अर्पित किया जाता, तो वे उसे पी लेती थीं। भारत के एक छोटे से गाँव में आरम्भ हुआ यह घटनाक्रम मिस्र के मेंढकों की भाँति समस्त देश में फैल गया। बीबीसी टेलीविज़न समाचार ने इस पर एक रिपोर्ट प्रस्तुत की, और अंत में, मानो सहसा विचार आया हो, टेलीविज़न पर बीबीसी के संवाददाता ने प्रश्न उठाया, "यदि हम कल लंदन संग्रहालय जाएँ और हिन्दू प्रतिमाओं में से किसी एक को दूध का एक गिलास अर्पित करें, तो क्या होगा?" अगले दिन की सायंकालीन समाचार में वही संवाददाता लंदन संग्रहालय में दिखाई दिया, और कैमरे चलते हुए उसने एक बड़ी हिन्दू प्रतिमा को दूध का गिलास अर्पित किया। जैसे ही गिलास प्रतिमा के हाँठों से स्पर्श हुआ, दूध तत्क्षण प्रतिमा के भीतर खिंच गया।

अमेरिकी इंडियन भविष्यवाणियों की आध्यात्मिक परंपरा में, 'Miracle' के नाम से ज्ञात सफेद भैंसे का जन्म 20 अगस्त 1994 को विस्कॉन्सिन के Janesville के पास Dave और Valerie Heider के फार्म पर हुआ। Miracle का जन्म सफेद फर के साथ हुआ, और उसके जन्म को कुछ लोगों ने एक नेटिव अमेरिकी भविष्यवाणी की पूर्ति माना। विभिन्न नेटिव अमेरिकी परंपराओं में, सफेद भैंसे का जन्म एक पवित्र और महत्वपूर्ण घटना माना जाता है, जो एकता, शांति और आध्यात्मिक नवीनीकरण का प्रतीक है। Miracle ने व्यापक ध्यान आकर्षित किया और कई लोगों के लिए आशा और आध्यात्मिक महत्त्व का प्रतीक बन गई। सफेद भैंसे की भविष्यवाणी को उसकी जड़ों तक खोजा जाता है और इसे नेटिव अमेरिकियों के आध्यात्मिकतावादी धर्म के सबसे पवित्र अवशेष से प्रत्यक्ष रूप से जोड़ा जाता है, क्योंकि सफेद भैंसे की प्रारंभिक कथा में ही "piece pipe" को संस्कृति में प्रस्तुत किया गया था।

1994 में, धर्मत्यागी प्रोटेस्टेंटवाद के झूठे भविष्यद्वक्ता के क्षेत्र में, "Holy Laughter" आन्दोलन, जिसे "Toronto Blessing" भी कहा जाता है, जनवरी 1994 में टोरंटो, ओंटारियो, कनाडा के टोरंटो एयरपोर्ट वाइनयार्ड चर्च (जिसे अब "Catch The Fire Toronto" कहा जाता है) में आरम्भ हुआ। पादरी जॉन और कैरोल आर्नोर्ट के नेतृत्व में आयोजित आध्यात्मिक जागृति सभाओं की एक श्रृंखला के दौरान, अनियंत्रित हँसी की परिघटना, साथ ही काँपना, रोना और गिर पड़ना, अथवा पशुओं तथा उनकी ध्वनियों की नकल करना (जिन्हें प्रायः "आत्मा में धराशायी होना" या "प्रभु में मत्त होना" कहा जाता है), मंडली के बीच घटित होने लगी।

हँसी तथा अन्य प्रगटन को प्रतिभागियों ने पवित्र आत्मा की उपस्थिति और कार्य का परिणाम माना; फलतः इस परिघटना का वर्णन करने के लिए "पवित्र हँसी" शब्द का प्रयोग होने लगा। टोरंटो एयरपोर्ट वाइनयार्ड कलीसिया में हुई जागृति सभाओं ने विश्वभर का ध्यान और आगंतुकों को आकर्षित किया, जिसके परिणामस्वरूप यह आंदोलन अन्य कलीसियाओं और समुदायों तक फैल गया। लोग उस हँसी का अनुभव करने हेतु विश्वभर से आए, और जब वे अपनी-अपनी गृह कलीसियाओं में लौटे, तब प्रायः वे कलीसियाएँ भी वही दुष्टात्मिक प्रगटन प्रकट होने लगते थे।

पैट रॉबर्टसन ने 1960 में क्रिश्चियन ब्रॉडकास्टिंग नेटवर्क (CBN) की स्थापना की। CBN ईसाई कार्यक्रमों के लिए समर्पित पहले टेलीविजन नेटवर्कों में से एक था, और इसने संयुक्त राज्य अमेरिका में ईसाई प्रसारण उद्योग के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वर्षों के दौरान, CBN ने टेलीविजन, रेडियो और डिजिटल मीडिया के माध्यम से अपनी पहुँच और प्रभाव का विस्तार किया है, और यह दुनिया के सबसे बड़े ईसाई मीडिया संगठनों में से एक बन गया है।

1988 में उन्होंने क्रिश्चियन कोएलिशन की स्थापना की और संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति पद के लिए चुनाव लड़ा। उनके विश्वासों की जड़ें नेशनल रिफॉर्म मूवमेंट और लॉईस डे अलायंस तक जाती हैं। उन दोनों संगठनों की शुरुआत 1888 में हुई थी, और उन्होंने ईसाई सिद्धांतों के आधार पर विभिन्न सामाजिक सुधारों की वकालत की, जिनमें शराब पर प्रतिबंध, महिलाओं को मताधिकार, और सब्बाथ (रविवार) को विश्राम और उपासना के दिन के रूप में मानना शामिल था। यह आंदोलन एवेंजेलिकल प्रोटेस्टेंटवाद से प्रभावित था और बाइबिल के सिद्धांतों द्वारा निर्देशित एक "ईसाई राष्ट्र" स्थापित करने का प्रयास करता था। रॉबर्टसन ने नेशनल रिफॉर्म मूवमेंट और लॉईस डे अलायंस दोनों के समान सिद्धांतों का प्रतिनिधित्व किया। इसी कारण से, उन्होंने रीजेंट यूनिवर्सिटी की भी स्थापना की।

पैट रॉबर्टसन ने 1977 में रीजेंट यूनिवर्सिटी की स्थापना की, कैथोलिक सिद्धांत के अनुरूप, जिसका विलियम मिलर ने साहसपूर्वक विरोध किया था। कैथोलिक धर्म और धर्मत्यागी प्रोटेस्टेंटवाद एक शैतानी बाइबिलीय कार्यपद्धति अपनाते हैं, जो, अन्य अपवित्र फलों के साथ-साथ, यह विश्वास उत्पन्न करती है कि यीशु के वास्तव में लौटने से पहले शांति के हजार वर्षों का समय होगा। रॉबर्टसन का मानना है कि उनका विश्वविद्यालय पुरुषों और महिलाओं को इस योग्य बनाता है कि वे बाइबिलीय सहस्राब्दी के दौरान मसीह के हजार वर्षीय शासन का संचालन करें। "रेजेंट" शब्द का अर्थ है ऐसा व्यक्ति जो किसी शासक या सम्राट के लिए, जो देश से बाहर है, प्रतिनिधि या उपशासक के रूप में कार्य करता है।

अन्त के समय 1989 से पहले, और कम से कम 1960 तक, 1888 में रविवार-विधेयक के लिए दबाव बनाने वाली संस्थाओं के आधुनिक समकक्ष इतिहास में प्रवेश कर चुके थे। 1989 के बाद, शैतानी प्रगटीकरणों ने अजगर, पशु और झूठे भविष्यद्वक्ता के धार्मिक क्षेत्र के तीनों तत्त्वों को झकझोर दिया। यीशु सदा किसी बात के अंत को उसकी ही शुरुआत के साथ पहचानते हैं, और 1989—जो दानियेल 11 के पद 40 में 'अन्त का समय' है—एक भविष्यसूचक काल का आरम्भ करता है, जो पद 41 के शीघ्र-आगामी रविवार-विधेयक पर समाप्त होता है। जब वह रविवार-विधेयक आ जाता है, तो शैतान 'मसीह का रूप धारण' करता हुआ प्रकट होता है, और चमत्कारों व चंगाइयों के साथ उसके छल का पराकाष्ठात्मक कार्य आरम्भ होता है।

उस भविष्योक्तिकाल की शुरुआत करने वाला इतिहास एक धर्मत्यागी प्रोटेस्टेंट आंदोलन के ऐसे कार्य की पहचान करता है, जो रविवार के कानून तक ले जाता है; जिसका प्रतिरूप 1989 में—जो उस काल की शुरुआत थी—दिखाया गया था। 1989 में 'लौह परदा' की 'दीवार' गिर गई, और इस काल के अंत में 'चर्च और राज्य के पृथक्करण की दीवार' गिरेगी। इस काल की शुरुआत आठ अंतिम राष्ट्रपतियों में से पहले दो को चिह्नित करती है। शुरुआत सोवियत संघ में नास्तिकता रूपी अपने शत्रु पर पापसी की विजय को दर्शाती है, और समापन संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रोटेस्टेंटवाद रूपी अपने शत्रु पर पापसी की विजय को चिह्नित करता है। शुरुआत उन आठ राष्ट्रपतियों में पहले (एक रिपब्लिकन) के बाइबल की भविष्यवाणी के मसीह-विरोधी के साथ हाथ मिलाने को दर्शाती है, और समापन उन आठ राष्ट्रपतियों में अंतिम के बाइबल की भविष्यवाणी के मसीह-विरोधी के साथ हाथ मिलाने को चिह्नित करता है। यह समझा जाता है कि वह पहला राष्ट्रपति दीवार को गिराने के लिए उत्तरदायी था, और अंतिम वही होगा जो दीवार बनाएगा।

1960 में आधुनिक राष्ट्रीय सुधार आंदोलन का आरंभ हुआ, और यह 1989 में समाप्ति के समय तक चला। निर्वाचन के बाद शैतानी चमत्कार आरंभ हो गए। रविवार के कानून से पहले राष्ट्रीय सुधारकों का अंतिम प्रकटन पुनः अपना राजनीतिक सिर उठाएगा। रविवार के कानून के समय, शैतान के विस्मयकारी कार्य का समय आ पहुँचेगा। रविवार के कानून से पूर्व, भविष्यसूचक अनिवार्यता के अनुसार, ऐसे न्याय होने आवश्यक होंगे जो न केवल संयुक्त राज्य अमेरिका की राष्ट्रीय समृद्धि को समाप्त कर दें, परन्तु वे न्याय, उसी भविष्यसूचक अनिवार्यता के अनुसार, इतने कठोर और भयावह होने चाहिए कि वह तर्क-आधार स्थापित हो जाए जो अंतिम राष्ट्रीय सुधार आंदोलन के जनों, ईसाई राष्ट्रवादियों, को उन न्यायों के कारण के रूप में उन नागरिकों की पहचान करने दे, जो उस दिन का अपवित्र कर रहे हैं जिसे वे प्रभु का दिन कहते हैं।

हम इस अध्ययन को अगले लेख में जारी रखेंगे।

यदि हमारे लोग उसी उदासीन मनोभाव में बने रहते हैं जिसमें वे रहे हैं, तो परमेश्वर उन पर अपनी आत्मा नहीं उंडेल सकता। वे उसके साथ सहकार्य करने के लिए तैयार नहीं हैं। वे स्थिति के प्रति जागरूक नहीं हैं और मंडराते खतरों को नहीं समझते। उन्हें अब, पहले कभी नहीं की तरह, सतर्कता और समन्वित कार्यवाही की अपनी आवश्यकता का एहसास होना चाहिए।

तीसरे स्वर्गदूत के विशिष्ट कार्य के महत्त्व को उसके अनुरूप नहीं समझा गया है। परमेश्वर की इच्छा थी कि उसकी प्रजा आज जिस स्थिति में है, उससे कहीं आगे बढ़ी हुई होती। पर अब, जब उनके सक्रिय होने का समय आ गया है, तब भी उन्हें तैयारी करनी है। जब राष्ट्रीय सुधारक धार्मिक स्वतंत्रता को सीमित करने के उपायों पर जोर देने लगे, तब हमारे अग्रणी जनों को स्थिति के प्रति सजग होना चाहिए था और इन प्रयासों का प्रतिकार करने के लिए गंभीरता से परिश्रम करना चाहिए था। यह परमेश्वर की व्यवस्था नहीं है कि हमारे लोगों से प्रकाश—वही वर्तमान सत्य जिसकी उन्हें इस समय आवश्यकता थी—छिपा रखा गया हो। तीसरे स्वर्गदूत का संदेश देने वाले हमारे प्रचारकों में से हर कोई वास्तव में यह नहीं समझता कि उस संदेश का मूल तत्व क्या है। राष्ट्रीय सुधार आंदोलन को कुछ लोगों ने इतना अल्पमहत्त्व का समझा है कि उन्होंने इसे विशेष ध्यान देने योग्य नहीं समझा, बल्कि उन्हें यह भी लगा कि ऐसा करने से वे तीसरे स्वर्गदूत के संदेश से भिन्न प्रश्नों पर समय खर्च करेंगे। प्रभु हमारे भाइयों को क्षमा करें कि उन्होंने इस समय के इसी संदेश की ऐसी व्याख्या की है।

लोगों को वर्तमान समय के खतरों के संबंध में सचेत किया जाना चाहिए। प्रहरी सो रहे हैं। हम वर्षों पीछे हैं। मुख्य प्रहरियों को यह तात्कालिक आवश्यकता महसूस हो कि वे स्वयं पर ध्यान दें, कहीं वे खतरों को देखने के लिए उन्हें दिए गए अवसर न खो दें।

यदि हमारे सम्मेलनों के अग्रणी पुरुष अब परमेश्वर द्वारा उन्हें भेजे गए संदेश को स्वीकार नहीं करते और कार्य के लिए पंक्ति में नहीं आते, तो कलीसियाओं को भारी हानि होगी। जब पहरेदार तलवार को आते देख तुरही में एक निश्चित ध्वनि फूँकता है, तो लोग उस चेतावनी को आगे तक गूँजा देते हैं, और सबको संघर्ष के लिए तैयार होने का अवसर मिलता है। परंतु अक्सर नेता ठिठक कर खड़ा रहता है, मानो कहता हो: 'हम अत्यधिक जल्दबाजी न

करें। कोई भूल हो सकती है। हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि झूठा बिगुल न बजा दें।' उसी की हिचकिचाहट और अनिश्चितता पुकारती है: "'शांति और सुरक्षा।' उत्तेजित मत होओ। घबराओ मत। धार्मिक संशोधन के इस प्रश्न को जितनी आवश्यकता है, उससे बहुत अधिक बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया गया है। यह हलचल अपने आप थम जाएगी।' इस प्रकार वह व्यवहारतः परमेश्वर से भेजे गए संदेश का इनकार करता है, और जो चेतावनी कलीसियाओं को झकझोरने के लिए दी गई थी, वह अपना कार्य करने में असफल रहती है। पहरेदार की तुरही कोई निश्चित ध्वनि नहीं देती, और लोग युद्ध के लिए तैयार नहीं होते। पहरेदार सावधान रहे, कहीं ऐसा न हो कि उसकी हिचकिचाहट और विलंब के कारण आत्माएँ नष्ट होने को छोड़ दी जाएँ, और उनका लहू उसके हाथ से माँगा जाए।

हम कई वर्षों से यह प्रतीक्षा कर रहे हैं कि हमारे देश में रविवार का कानून पारित किया जाए; और अब जब यह आंदोलन हमारे ठीक सामने आ पहुँचा है, हम पूछते हैं: क्या हमारे लोग इस मामले में अपना कर्तव्य निभाएँगे? क्या हम ध्वज को ऊँचा उठाने और उन लोगों को अग्रपंक्ति में बुलाने में सहायता नहीं कर सकते जो अपने धार्मिक अधिकारों और विशेषाधिकारों का सम्मान करते हैं? वह समय तेजी से निकट आ रहा है जब जो लोग मनुष्य की बजाय परमेश्वर की आज्ञा मानना चुनते हैं, उन्हें दमन की मार झेलनी पड़ेगी। क्या तब हम चुप रहकर, जब उसकी पवित्र आज्ञाएँ पैरों तले रौंदी जा रही हों, परमेश्वर का अपमान करेंगे?

जब प्रोटेस्टेंट विश्व अपने रुख से रोम के प्रति रियायतें दे रहा है, तो आइए हम जाग उठें, स्थिति को समझें और हमारे सामने उपस्थित संघर्ष को उसके सही परिप्रेक्ष्य में देखें। अब प्रहरी अपनी आवाज़ उठाएँ और वह संदेश दें जो इस समय के लिए वर्तमान सत्य है। आइए हम लोगों को दिखाएँ कि भविष्यवाणी के इतिहास में हम कहाँ खड़े हैं और सच्चे प्रोटेस्टेंटवाद की भावना को जगाने का प्रयास करें, ताकि संसार को धार्मिक स्वतंत्रता के उन विशेषाधिकारों के मूल्य का बोध हो, जिनका इतने लंबे समय से लाभ उठाया गया है।

परमेश्वर हमें जाग उठने के लिए बुलाता है, क्योंकि अंत निकट है। हर बीतता घंटा स्वर्गीय दरबारों में गतिविधियों का है—पृथ्वी पर एक ऐसी प्रजा को तैयार करने के लिए कि वे उन महान घटनाओं में अपना भाग निभाएँ, जो शीघ्र ही हमारे सामने प्रकट होने वाली हैं। ये बीतते क्षण, जो हमें बहुत कम मूल्य के प्रतीत होते हैं, अनन्त महत्व से परिपूर्ण हैं। वे आत्माओं की नियति को अनन्त जीवन या शाश्वत मृत्यु के लिए ढाल रहे हैं। हम आज लोगों के कानों में जो वचन बोलते हैं, जो कार्य हम कर रहे हैं, और जो संदेश का भाव हम लेकर चल रहे हैं—वे या तो जीवन के लिये जीवन की सुगन्ध होंगे, या मृत्यु के लिये मृत्यु की।

"मेरे भाइयो, क्या आप यह समझते हैं कि आपकी अपनी मुक्ति, तथा अन्य आत्माओं का भाग्य भी, उस तैयारी पर निर्भर करता है जो आप अभी हमारे सामने आने वाली परीक्षा के लिए कर रहे हैं? क्या आपके पास वह जोश की तीव्रता, वह धर्मपरायणता और समर्पण है, जो आपको तब दृढ़ता से खड़े रहने में सक्षम बनाएगा जब आपके विरुद्ध विरोध उठ खड़ा होगा? यदि परमेश्वर ने कभी मेरे माध्यम से बात की है, तो समय आएगा जब आपको परिषदों के सामने लाया जाएगा, और सत्य के हर उस मत की, जिसे आप थामे हुए हैं, कड़ी आलोचना की जाएगी। वह समय, जिसे बहुत से लोग अभी यूँ ही व्यर्थ जाने दे रहे हैं, हमें उस दायित्व में लगाना चाहिए जो परमेश्वर ने हमें दिया है—आगामी संकट की तैयारी करने का।" टेस्टिमोनीज़, खंड 5, 714-716.